

শ্রীঃ
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

শ্রী রল্লভাচার্য রিরচিতং
॥ শ্রী নন্দকুমারাষ্টকম্ ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्री नन्दकुमाराष्टकम् ॥

सुन्दरगोपालम् उररनमालं नयनरिशालं दुःखहरं
बृन्दारनचन्द्रम् आनन्दकन्दं परमानन्दं धरणिधरम्।
रत्नभङ्गनश्यामं पूर्णकामम् अत्यभिरामं प्रीतिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तद्भुरिचारं ब्रह्मपरम् ॥ 1 ॥

सुन्दररारिजरदनं निर्जितमदनम् आनन्दसदनं मुकुटधरं
गुञ्जाकृतिहारं रिपिनरिहारं परमोदारं टीरहरम्।
रत्नभङ्गपटपीतं कृत उपरीतं करनरनीतं रिबुधरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तद्भुरिचारं ब्रह्मपरम् ॥ 2 ॥

शोभितमुखधूलं यमुनाकुलं निपट अतूलं सुखदतरं
मुखमण्डितरेणुं चारितधेनुं रादितरेणुं मधुरसुरम्।
रत्नभङ्गमतिरिमलं शुभपदकमलं नखरुचि अमलं तिमिरहरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तद्भुरिचारं ब्रह्मपरम् ॥ 3 ॥

शिरमुकुटसुदेशं कुञ्जितकेशं नटरररेशं कामररं
मायाकृतमनुजं हलधर अनुजं प्रतिहतदनुजं भारहरम्।
रत्नभङ्गब्रजपालं सुभगसुचालं हितमनुकालं भारररं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तद्भुरिचारं ब्रह्मपरम् ॥ 4 ॥

इन्दिररभासं प्रकटसुरासं कुसुमरिकासं रंशिधरं
हृतमन्मथमानं रूपनिधानं कृतकलगानं चित्तहरम्।
रत्नभङ्गदुहासं कुञ्जनिवासं रिधिधरिलासं केलिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तद्भुरिचारं ब्रह्मपरम् ॥ 5 ॥

অতিপরপ্রীণং পালিতদীনং ভক্তাধীনং কর্মকরং
মোহনমতিধীরং ফণিবলরীরং হতপররীরং তরলতরম্।
রল্লভব্রজরমণং বারিজরদনং হলধরশমনং শৈলধরং
ভজ নন্দকুমারং সর্সুখসারং তত্ত্বরিচারং ব্রহ্মপরম্ ॥ 6 ॥

জলধরদ্যুতি অঙ্গং ললিতত্রিভঙ্গং বহুকৃতরঙ্গং রসিকররং
গোকুলপরিবারং মদনাকারং কুঞ্জরিহারং গুচতরম্।
রল্লভব্রজচন্দ্রং সুভগসুছন্দং কৃত আনন্দং ভ্রান্তিহরং
ভজ নন্দকুমারং সর্সুখসারং তত্ত্বরিচারং ব্রহ্মপরম্ ॥ 7 ॥

রন্দিতযুগচরণং পারনকরণং জগদুদ্ধরণং রিমলধরং
কালিযশিরগমনং কৃতফণিনমনং ঘাতিতযমনং মৃদুলতরম্।
রল্লভদুঃখহরণং নির্মলচরণম্ অশরণশরণং মুক্তিকরং
ভজ নন্দকুমারং সর্সুখসারং তত্ত্বরিচারং ব্রহ্মপরম্ ॥ 8 ॥

॥ ইতি শ্রী নন্দকুমারাষ্টকং সমাপ্তম্ ॥